मीराँ बाई के पदों का महत्व

*डॉ. किशनी फुलवानी

मेरे घर के सामने एक सिंधी परिवार रहता था। उस घर की माँ अपनी बेटी को मीराँ, मीराँ कहकर आवाज लगाती रहती थी। मुझे याद नहीं की मैंने अपनी चौथी या पांचवी कक्षा की पाठ्य पुस्तक मे मीराँ शब्द पढ़ा था? अपनी पाठ्य पुस्तक में कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास के बाद मीराँ बाई का पाठ पढ़ा था तो बहुत खुश हुई थी कि पुरूष संतो के बाद स्त्री संत का नाम "मीराँ बाई" हैं

सिंधी परिवार में विवाह के अवसर पर मीराँ के भजन भी सुनती रहती थी। मारवाड़ी परिवारों में – मीराँ ने परणायों राणा जी, मीराँ ने परणायों शादी के गीत भी सुनती थी।

इस प्रकार एक राजपरिवार की कन्या जो अल्पआयु में विधवा हो गई थी, उसको और उसके पदों को पढ़ना और गाना मेरे लिए एक गौरव की बात बन गई थी। विश्व में मीराँ के कारण राजस्थान का मान बहुत बढ़ गया है। मैं हिन्दी साहित्य की विधार्थी हूं। भक्ति साहित्य में सर्वप्रथम कबीर को पढ़ा जिन्होने कहा –

"ढाई आखर प्रेम का", पढ़े सो पंडित होय। उसके बाद हिन्दी साहित्य में हमने सूफियों का पढ़ा जो सिर्फ प्रेम की बात कहतें हैं। मलिक मोहम्मद जायसी आदि सूफी कहते हैं – जिसने संसार में प्रेम नहीं किया, वह ईश्वर से कैसे प्रेम कर सकता हैं?

मीरां ने इन सबसे उच्ची बात कहीं –

ऐरी मैं तो प्रेम दिवानी, मेरा दरद न जाने कोय।

'प्रेम' संसार में एक श्रेष्ठ भावना हैं उस पर एक राजपरिवार की विधवा महिला का यह कहना वह तो प्रेम दिवानी है उसके दरद को कोई नहीं समझ सकता हैं।

वास्तव में मीरां के 'दरद' की कितनी व्यापकता है, संसार में कोई नही समझ सकता है। उसका दरद श्रृष्टि के कण कण में समाया हुआ है।

जीवन परिचय

मीरां का जन्म जोधपुर राज्य के मेड़ता रियासत में हुआ था। राव दूदा के चौथे पुत्र रतन सिंह के यहाँ कुड़की में इनका जन्म सम्वत 1575 में हुआ। कुछ 1555 वीं. मानते हैं। मीरां की माता का देहान्त बाल्यकाल में हो गया था। यह दरद कोई कम था? उसका पालन पोषण परम वैष्णव भक्त राव दूदा ने ही किया था। उन्होने ही इनका नाम मीरां रखा जिसका तात्पर्य होता है 'स्वच्छ जल धारा'।

शैशवास्था में मीरां का ध्यान भगवत भक्ति में लग गया था। अनजाने में ही वह बालगौपाल कृष्ण को अपना पति मानने लगी थी।

मीरां का विवाह 12वर्ष की आयु में राजा भोज के साथ कर दिया गया। राजाभोज चित्तौड़ के महाराणा सांगा के पुत्र थे। राजाभोज की मृत्यु अल्पआयु में ही हो गई थी। मीरां को यह दूसरा दरद मिल गया।

वह अधिकांश समय साधु–संगत, कृष्ण कथा, कीर्तन और भजन में व्यतित करने लगी। इस प्रकार मीरां के पदों में हम कृष्ण भक्ति की विशाल परम्परा को पाते हैं। मीरां ने कृष्ण की कान्ताभाव भक्ति को अपनाया। भक्ति की सगुण धारा में सर्वप्रथम अपने आराध्य के रूपसौन्दर्य का वर्णन किया जाता हैं। मीरां ने गाया है –

"बसो मेरे नैनन में नदंलाल।

मोहनि मूरत सांवरि सूरति, नैना बने विसाल।

अधर सुधारस मुरली राजत उरवैजन्तीमाल।

क्षुद्र घंटिका कटितर सोभति, नूपूर शब्द रसाल।"

मीरां के प्रभु संतन सुखदाई, भक्त वछल गोपाल।

कृष्ण के इस रूप को देख कर भला कौन न अनको अपने नयनों में बसाना चाहेगा? हमें इेर्ष्या होती है कि संसार में यह परम–पुरूष मीरां के आराध्य है, उसके पति हैं। मीरां अपने मन की रानी थी वह सहर्ष घोषण करती है कि –

माई री म्हा तो लियो गोविन्दो मोल,

कोई कहे छानै कोई कहे चौड़े लियोरि बजन्ता ढ़ौल।

मीरां की यह घोषणा उसके देवर, सास और राज परिवार सहन शक्ति से परे थी। क्योंकि राजपरिवार की महिलाएँ तो झरोके से भी बाहर नहीं झांक सकती थी। उस पर मीरां तो राजपरिवार की एक विधवा रानी थी। उसकी हत्या का प्रयास किया गया। उसका अटल विश्वास, अडिग आस्थाा और अदम्य साहस के सामने सांप के पिटारे में फूलों का हार तथा विष का प्याला अमृत बन जाता था।

मीरां की रचनाएँ

मीरां ने अनेक रचनाएँ कि हैं –

नरसीजी का मायरा, गीत गोविन्दजी की टीका, मीरां की गरबी, रावगोविन्द और राज सोरठ के पद आदि मीरां की रचनाएँ हैं। मीरां के पद गुजराती, मारवाड़ी, हिन्दी और लोक भाषा के रूपे में मिलते हैं।

संसार की नश्वरता के बारे में वह बहुत सरल, सहज सब्दों में समझाती हैं।–

भजमन! चरण कँवल अविनासी।

जेताइ दीसै धरणी–गगनविच, तेताई सब उठि जासी।

अब मीरां के पास एक अमोलक धन था – कृष्ण

"पायोरी मैनें राम रतन धन पायों।

बसत अमोलक दी मेरे सतगुरू, करी किरपा अपणायों।"

भक्त अपने आराध्य के दर्शन के बिना एक पल भी नहीं जी सकता फिर मीरां तो एक स्त्री थीं –

दरस बिन दुखन लागे नैन ।

जबसे तुम बिछुड़े, मोरे प्रभुजी, कबहूँ न पायो चैन।

मीरां ने भोले–भाले लोगों को सझाया –

रामनाम रस पीजैं, मनुवा राम नाम रस पीजैं।

तजि कुसंग सतसंग बैठ नित, हरिचर्चा सुण लीजै।।

मीरां को वृन्दावन (कृष्ण का घर) कितना अच्छा लगता है। वह गाती हैं –

आली, म्हाने लागे बिन्द्रावन नीकों,

घर घर तुलसी ठाकुर पूजा दरसण गोविन्दजी को।।

मीरां के इन पदों को सुनकर, पढ़कर लगता है कि मीरां को वैष्णव भक्ति परम्परा का पूर्ण ज्ञान था। मीरां के काव्य में प्रमुख स्वर भगवान कृष्ण का अनन्य प्रेम हैं। प्रेम की पीर, आत्म निवेदन, आत्म समर्पण एवं विरह वेदना विषयक पद उनकी भक्ति के पुष्ठ प्रमाण के घोतक हैं। मीरां के पदों में श्रृंगार रस के दोनों भेद अर्थात निर्गुण–सगुण धाराओं का पूर्ण प्रभाव हैं। मीरां के पद कलापक्ष और भावपक्ष दोनों की तुलना में भावपक्ष को अत्याधिक उजागर करती हैं। पदों में संगीतात्मकता, गेयात्मकता भाषायी कोमलता के साथ–साथ भाव प्रेवणता उनके पदों में मौजूद हैं।

दूरदर्शन पर मीरां के सिरियल में एक गीत था। मेरी छोटी बेटी भी गाया करती थी –

ओ मोरो सांवरों, औ मोरो सांवरों।

देश–विदेश में मीरां संत शिरोमणी के रूप में विख्यात हैं। "मीरांमिशन" के नाम से कितनी हीं संस्थाऐं कार्य करती हैं।

***एसोसिएट प्रोफेसर**
(हिन्दी)
सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय
अजमेर (राज.)

संदर्भ ग्रन्थ –

1. हिन्दी साहित्य का विवेचनातमक इतिहास, राजनाथ शर्मा, एम.ए. विनोद पुस्तक भंडार (आगरा)
2. प्राचीन काव्य सरिता, सम्पादक – डॉ. जयभगवान गोयल पूर्व विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय।
3. मीराँ के साहित्य की उपादेयता – स्त्री चेतना के संदर्भ में। शोध प्रबन्ध – डॉ. प्रतिमा खटुमरा कोली। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, अजमेर।